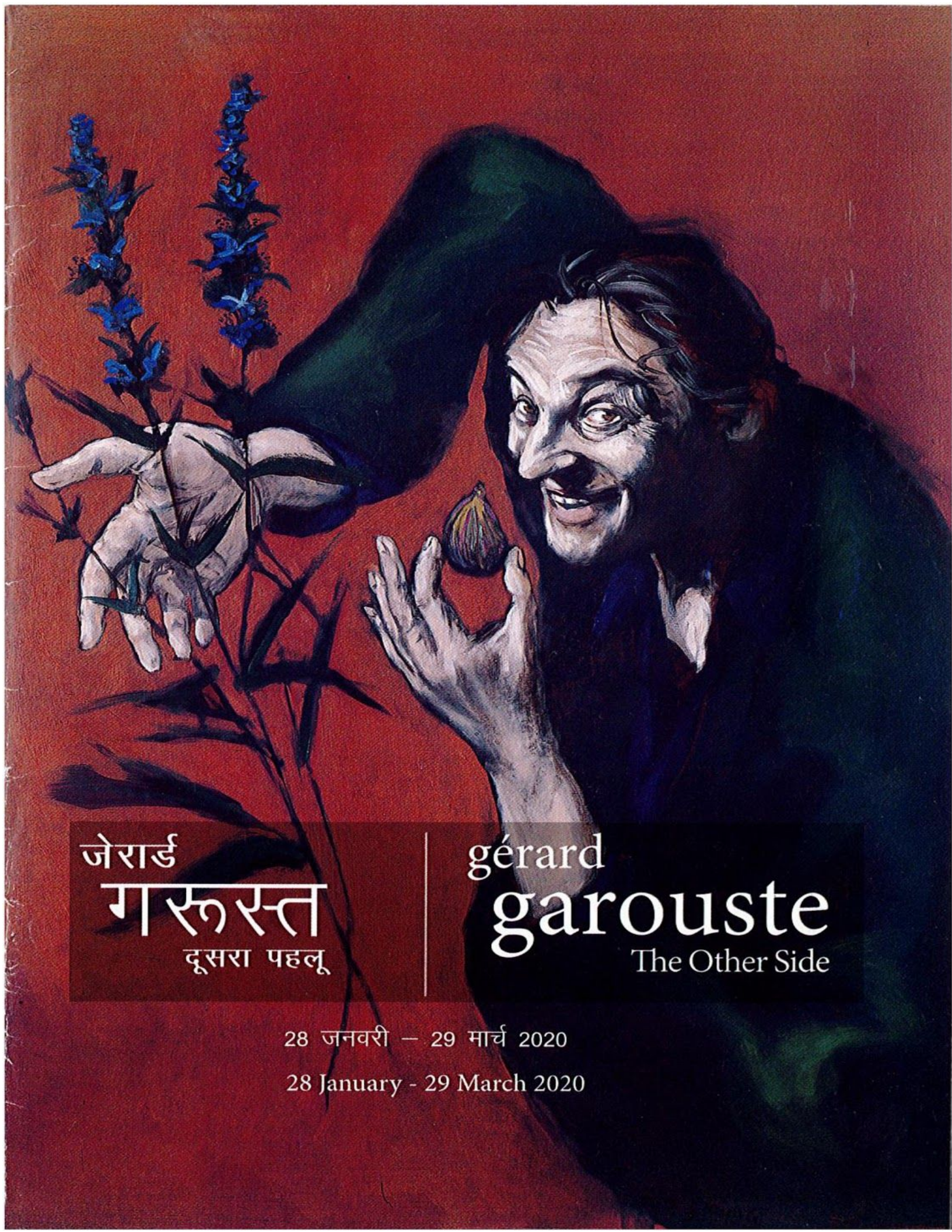

जेराड गरूस्त
दूसरा पहलू

gérard garouste
The Other Side

28 जनवरी – 29 मार्च 2020

28 January - 29 March 2020

चित्रकार भी आखिरकार एक जीवित व्यक्तिव है, जो मार्सैल ड्यूशौं द्वारा प्रशंसा की सराहना कर सकता है, उसके अनुसार उसे वर्णक के रंग और कैनवस की सतह से आगे कुछ नहीं दिखाई देता। ड्यूशौं भले ही इसके आगे न देख सका हो, लेकिन कम से कम उसने अपनी आंखो के सामने जो था, उसे देखा व सतह से पीछे की ओर देखते हुए उसे कुछ ऐसे प्रतिबंध नजर आये जिन्होने उसकी आंखों को गिरफ्त में लिया।

आज, चित्रकला ने एक माध्यम के रूप में अत्याधिक महत्व हासिल कर लिया है। यह केवल आधुनिक नहीं रह गई है एंव उसमें और कुछ नया करने की अनिवार्यता भी नही है। यह एक अच्छी बात है, क्योंकि मौलिकता से कभी कोई अर्थ उत्पन्न नहीं हुआ है। कला की असामान्य व परम्परा विरोधी तीव्र इच्छा ने उसका चरम और अंतिम बिंदु, ड्यूशौं में पा लिया। तब से, हमने प्रतिधित्व के नियमों का क्रमिक विघटन देखा है।

भौतिक रूप से बोला जाए तो चित्रकला अपने विकासवादी मार्ग के अंत तक पहुँच गई है। जो बच गया है, वह सारहीन है। जो रह गया है, वह प्रश्न का विषय है। यहां पर मुद्दा, कला की भौतिक व मानसिक सीमाओं का परीक्षण करना नहीं है बल्कि उन आकृतियों व छवियों की शक्ति को देखना है, जोकि हमारी आंखों से छिपी है और साथ ही उनकी अस्पष्टता एंव परिसमाप्ति को देखना है।

मैंने, तर्क को समझने की कोशिश की है व विचार किया है कि कैसे नियमों को उल्टा कर छवि को सबसे प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत किया जाता है। कला में नैतिकता एंव सामाजिक सामंजस्य होना चाहिए जोकि सौंदर्य के मानदंड से परे हो। एक कलाकार के रूप में मेरे कुछ नैतिक मूल्य एंव आधार है। मेरी चित्रकला सौंदर्य के विचार को तलाश नहीं करती। बल्कि मैं क्या महसूस करता हूँ, उसको दर्शाती है। मैं यह महसूस करता हूँ कि लोग एक–दूसरे को समझना नहीं चाहते बल्कि एक–दूसरे से अलग हो जाते है और भारी अत्याचार, यंहा तक कि तबाही भी करते हैं।

मेरा लक्ष्य यह दिखाना है कि सदियों से, कैसे हमारी आंखों को निष्क्रियता और अंधेपन की आदत डाली गई हैं। यही कारण है कि मैं अपनी संस्कृति की ओर वापस गया और वहीं से मेरी आंखों को उनका जीवनाधार मिला। मेरा दृष्टिकोण उस सांचे को तोड़ना हैं जिसने हमारी सोच को आकार दिया है जैसे कि मुझसे पहले दूसरों ने आकार को नष्ट कर, उन छवियों का प्रयोग किया है, जो हमारी सामूहिक स्मृति में गहराई तक समाई हैं।

इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित प्रत्येक कैनवस एक व्युत्क्रम् को व्यक्त करता है, जोकि हमारी कला के शास्त्रों को पूरी से परिवर्तित कर नया रूपांतरण करता है, जिसकी मैं नैतिक जिम्मेदारी लेता हूँ। मैंने, इसे ईसाई कलाशास्त्र पर हिब्रू में लिखित स्त्रोतों के द्वारा तैयार किया है।

जेरार्ड गारूस्त

A painter is, after all, a visual being, and can appreciate Marcel Duchamp's compliment when the latter said that he could see no further than the color of the pigment and the surface of the canvas. Duchamp may have seen no further, but at least he saw what was in front of him, from the surface looking back thus upending some of the taboos that hold our eye most firmly in their grip.

Painting has acquired an enormous value now that it is no longer modern and thus can escape the imperative of doing something new. That's a very good thing, because originality has never produced meaning. Art's great iconoclastic urge found its master and its endpoint with Duchamp. Since then, we've witnessed the gradual disintegration of the rules of representation.

Materially speaking, painting has reached the end of its evolutionary road. What remains is immaterial. What remains is the question of the subject. The point here is not to test the material and mental frontiers of art but to bring out the power of the image that has forged our eye, and to show both its finality and its ambiguities.

I have sought to grasp the logic and ponder how the rules could be turned upside down and the image presented in the most direct way. Art should have an ethical function, a social raison to exist that goes beyond aesthetic criteria. As an artist I am for certain moral values and stands. My painting does not seek to attain some idea of beauty but rather comes from what I feel when I realise that people refuse to understand one another and instead exclude each other and carry out the worst atrocities, even extermination.

My goal is to show how, for centuries, our eye has been prepared for submission and got used to passivity and blindness. That's why I have gone back to the wellsprings of our culture from which my eye draws its sustenance. My approach seeks to break the mold that has shaped our vision, just as others before me have dismantled form, using the images most deeply imprinted on our collective memory.

Each canvas in this show expresses a reversal, turning our iconographic codes upside down to achieve a transformation for which I take moral responsibility. To prepare, I have poured over the Hebrew written sources of Christian iconography.

Gérard Garouste

राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय प्रदर्शनी "जेरार्ड गारूस्त– दूसरा पहलू" को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा हैं। भारत एंव फ्रांस के संयुक्त सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के अन्तगर्त फ्रांसीसी कलाकार जेरार्ड गरूस्त की प्रदर्शनी का आयोजन फ्रांसीसी संस्थान के सहयोग से सम्पन्न हो रहा है।

इस प्रदर्शनी में प्रमुख फ्रांसीसी कलाकार जेरार्ड गारूस्त की 50 से अधिक कलाकृतियॉ व रचनाओं को प्रदर्शित किया गया है, जो उनके जीवन की कहानी और अनुभवों के व्यापक सफर को दिखाती है। जेरार्ड गारूस्त एक ऐसे कलाकार हैं जिनके चित्रों एंव मूर्तियों से संस्कृति, मिथको, एवं पुराने फ्रांसीसी गुरूओं दर्शनशास्त्रियों एवं लेखकों पर मजबूत पकड़ दृष्टिगत होती है। इस कलाकार का सामाजिक जीवन बहुत ही चुनौतीपूर्ण था, जिसे उन्होंने अपने कैनवस पर बहुत ही गहनता से अभिव्यक्त किया। उनकी कृतियां उनके कलात्मक मूल्य के कारण महत्वपूर्ण हैं और साथ ही यह कला प्रेमियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत भी हैं। गरूंस्त का कलात्मक सफर भारतीय संदर्भ में संभाषण के कई विषयों को खोलता है।

एक कलाकार के रूप में गरूस्त अपनी कला के निरूपण में विभिन्न कहानियों व रूपकों के प्रयोग करते रहे हैं। उनकी कलाकृतियों में व्यंग्य, हास्य एंव ऐसी कहानियॅा है, जो गहरी उदासी को दर्शाती है। कलाकार गारूस्त, अतीत की सड़कों पर भटकते हैं। वह अपने बनाए चरित्रों की चिंता करते हैं व अपने चित्रो द्वारा अनेक प्रश्न पूछ रहे हैं। ये कलाकृतियां अनिश्चितता के सिद्धांत पर आधारित हैं जो दुनिया के आधुनिक मामलों को दर्शाती हैं। उनके चित्र महान मास्टर्स राफैल, टिंटोरेटो, रैम्ब्रैंड इत्यादि की शिक्षाओं को चित्रित करती है। चित्रात्मक स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति के लालित्य के माध्यम से कहानियों को बताने की कला, उनके समकालीन चरित्र और परंपरा का सबसे महत्वपर्ण पक्ष है। एक कलाकार के रूप में इन्होंने जितनी छाया के खेल और अतियथार्थवाद की भाषा में महारत हासिल की है, उससे अधिक कैनवस पर उनका तेलरंग, रंगों और प्रकाश को उभारता है। उनके चित्र विचलित, हर्षित, दुःखी और भावप्रवण हैं, वे मानवीय स्थिति में एक ठहराव के साथ हमें चिंतन करने के लिए मजबूर करते हैं। वे अराजकता, रहस्य, साहित्य और आध्यात्मिकता का आह्वान करते हैं।

मुझे विश्वास है कि राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय में यह प्रदर्शनी, भारत– फ्रांस के जीवंत सांस्कृतिक संबंधों के निर्माण में एक महत्वपूर्ण कदम है, और पारस्परिक आधार पर आधुनिक और समकालीन कला दिखाने का अवसर भी है।

मैं, कलाकार जेरार्ड गारूस्त का धन्यवाद करता हूँ और साथ ही यह भी कहना चाहता हूँ कि उनकी कलाकृतियों को प्रदर्शित करना रा.आ.क.सं. के लिए प्रसन्नता का विषय है। इस प्रदर्शनी ने हमें भारत –फ्रांसीसी संबंधों को नए सिरे से देखने और अपने समकालीन समय में सांस्कृतिक संबंधों को पुनर्जीवित करने का अवसर दिया है। मैं, डॉ बर्ट्राडे हार्टिंग, काउंसलर फॉर एजुकेशन साइंस एंड कल्चर, फ्रांसीसी दूतावास का आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने रा.आ. क.सं. नई दिल्ली में जेरार्ड गारूस्त की इस प्रदर्शनी के द्वारा सांस्कृतिक परिदृश्यों को तलाशने और भारत–फ्रांस के मध्य द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने में अपना विश्वास दिखाया ।

मैं, फ्रांस के पूर्व संस्कृति मंत्री और इस प्रदर्शनी के क्यूरेटर श्री जौं जाक आइयागौं के प्रति विशेष सम्मान व्यक्त करता हूँ। मुझे खुशी है कि भारत में फ्रांसीसी संस्थान इस प्रदर्शनी को नई दिल्ली में प्रस्तुत करने के लिए नाडेल एजेंसी और हमारे साथी रहे हैं और इस

प्रदर्शनी के आयोजन हेतु हर स्तर पर अपना मूल्यवान सहयोग प्रदान करते रहे हैं।

मैं, सस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार रा.आ.क.सं. नई दिल्ली की सलाहाकार समिति का हमारे प्रयासों का समर्थन करने के लिए धन्यवाद करता हूँ। मैं, कलाकार और राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय की क्यूरेटोरियल टीम के मध्य मुख्य कड़ी हाने के लिए फ्रेंच इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया की टीम के प्रयासों की सराहना करता हूँ। इसी के साथ रा.आ.क.सं. की क्यूरेटोरियल टीम के अथक प्रयासों के लिए उनकी सराहना करता हूँ, जिन्होनें प्रशासनिक व क्यूरेटोरियल कार्य को पूर्ण दक्षता से करने हतु हर संभव प्रयास किया तथा रा.आ.क.स. के पूरे स्टाफ की भी प्रशसां करता हूँ जिन्होंने इस प्रदर्शनी को आयोजित करने हेतु अपना पूर्ण यागेदान दिया।

मैं, फ्रांस के माननीय संस्कृति मत्री श्री एच. ई. रीस्टर को विशेष रूप से बधाई देता हूँ एवं भारत में फ्रांस के राजदूत श्रीमान इमैनुएल लेनिन और साथ ही आने वाले प्रतिनिधिमडंल व प्रैस के सदस्य और विभिन्न अधिकारी जो इस कार्य के समर्थन में भागीदार उनका भी बधाई देता हूँ।

मैं, फ्रासं के सभी महेमानों और प्रदर्शनी के सभी दर्शकों को राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय में आयोजित प्रदर्शनियों में प्रदर्शित समृद्ध संग्रहों के विषय में जानने के लिए आमंत्रित करता हूँ। रा.आ.क.सं. द्वारा संरक्षित 17,000 से अधिक कलाकृतियां समृद्ध और देदीप्यमान अतीत की साक्षी हैं तथा वर्तमान को सम्मानित करती हैं।

मुझे आशा है कि दिल्ली में इस प्रदर्शनी को बहुत मान्यता मिलेगी एवं आगतुंक इसमें कलाकृतियों को देखने का आनंद लेगें व इसके प्रकाशन को पढ़ेगें।

मैं इस प्रदर्शनी की सफलता की कामना करता हूँ और इस संदर्भ में परिकल्पित विभिन्न सहायक गतिविधियों, वार्ताओं और कार्यशालाओं को आमंत्रित करता हूँ।

अद्वैत चरण गडनायक
महानिदेशक
राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

It is with great pleasure that the National Gallery of Modern Art, New Delhi, presents the exhibition "Gerard Garouste – The Other Side", organized in collaboration with the Embassy of France / French Institute in India under the auspices of the Cultural Exchange Programme.

The exhibition showcases over 50 art works of leading contemporary French artist Gerard Garouste. These works are a comprehensive and fascinating journey of his life and experiences. Gerard Garouste is a painter and sculptor, who is gripped by culture, myths and the legacy of old French masters, philosophers and writers. The artist had a very challenging social life and expressed it very intensely on his canvas. His works are important for their artistic value as well serve as an inspiration for many. Mr. Garouste's artistic journey opens up various themes of discourse in the Indian context.

In Garouste's work, we see multiple stories and metaphors in his representations. There is satire, humour and the narrative of one who understands deep melancholia. Garouste wanders the roads of the past, he worries about the characters he creates, and he is always asking questions. These works are based on the principle of uncertainty which animates the modern matters of the world.

His paintings transcend the teachings of the Great Masters (Raphael, Tintoretto, Rembrandt...) to redefine our relationship to painting and reflect upon the meaning of representation. Pictorial freedom and the power to tell stories through the elegance of expression becomes the most important leitmotif of his contemporary character and conventions. His oils on canvas bring out colour and light as much as they master the play of shadows and the language of surrealism. His paintings are disturbing and joyous, sad and stirring, they compel us to pause and contemplate the human condition. They evoke order in connection with chaos, the "open" poetry of matter and mystery, literature and spirituality.

I believe that this exhibition at the NGMA is a significant step in building lively cultural relations, and an opportunity to show modern and contemporary art on a reciprocal basis.

I thank the artist Gerard Garouste and express that the NGMA is happy to showcase his works of art. It has given us an opportunity to look at India-French relations afresh and to revalidate cultural ties to our contemporary times. I extend my gratitude to Dr. Bertrand de Hartingh, Counsellor for Education Science and Culture, Embassy of France for his belief that the exhibition of Gerard Garouste at the NGMA, New Delhi, will explore the glorious cultural linkages and also strengthen bilateral ties between India and France. I would like to express my special regards to Mr. Jean-Jacques Aillagon, former French Minister of

Culture and Curator of this exhibition. I am happy that the French Institute in India has been the nodal agency and our partner to present this exhibition in New Delhi and provide us the valued assistance and support at every stage of organising this exhibition. I thank the Ministry of Culture, Government of India and the Advisory Committee of NGMA, New Delhi for supporting our endeavours.

I appreciate the efforts of the French Institute in India's team for being the main link between NGMA and the artist, NGMA's curatorial team who have handled the administrative and curatorial task with professionalism and all staff members who have contributed to present this exhibition as envisaged. Finally, I convey my special acknowledgements to the Hon'ble Minister of Culture of the Government of France, H.E. Mr Franck Riester, the Ambassador of France to India, H.E. Mr Emmanuel Lenain as well as the visiting delegation, members of the press and different authorities and partners of the exhibition for supporting this operation.

I invite all guests from France and viewers of the exhibition to take the time to explore the rich collections of the National Gallery of Modern Art, an institution created to acquire and preserve works of art from 1857 onwards. The over 17,000 works housed by the NGMA testify to a rich and resplendent past while acknowledging and honouring the present.

I hope that the exhibition receives great recognition here in New Delhi, and the visitors enjoy viewing the artworks and reading this publication.

I wish the exhibition all the success and invite you to the various ancillary activities, talks and workshops conceived in this context from now until the next few months.

Adwaita Charan Garanayak
Director General
National Gallery of Modern Art
Ministry of Culture
Government of India

राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली में आयोजित प्रदर्शनी जेरार्ड गरूस्त – द अदर साइड द्वारा फ्रांस – भारत के सांस्कृतिक संबंधों के नये पड़ाव को चिन्हित किया गया है। निसंदेह ही जेरार्ड गारूस्त – एक अवर्गीकृत कलाकार है एवं उनके परंपरा विरोधी कार्य ने निश्चित रूप से समकालीन चित्रकला पर अपनी छाप छोड़ी है। उन्होने अपनी विलक्षणता तथा प्रतीकात्मक शक्ति और इस विषय पर पेश किए गए प्रतिबिंबों द्वारा चुनौती दी है। भारत में फ्रांस के दूतावास ने फ्रांसीसी कलाकार के समर्थन में गैलरी तौम्पलों द्वारा शुरू की गई इस परियोजना को विकसित किया एंव पूर्ण उत्साह के साथ पूरा किया।

जेरार्ड गारूस्त की चित्रकला विशेष रूप से भारत में प्रतिध्वनित होगी क्योंकि उन्होंने मिथकों, प्रतीकों और धार्मिकता का चित्रिण किया है। यह सभी आयाम इस देश में विशेष रूप से मौजूद हैं जहां कला, संस्कृति एंव रीति रिवाज़ों का एक गहरा आध्यात्मिक रंग हैं। जेरार्ड गरूस्त ने दावा किया कि एक तर्कवादी और एक पागल एक साथ हर एक में मौजूद है। मुझे बहुत खुशी है कि भारतीय जनता भी इस फ्रांसीसी कलाकार की जटिल प्रतिभा को परख सकेगी जिन्हें अन्तराष्ट्रीय स्तर पर बहुत पहचान मिली हुई है।

भारत से बेहतर, ऐसा कौन सा राष्ट्र है जो अपनी परंपराओं और प्राचीन ज्ञान के प्रति लगाव के बीच एक निरंतर बातचीत को सबसे प्रचुरता और मौलिकता के साथ देखता है ? जेरार्ड गरूस्त के काम में जो तनाव हम देखते हैं, वह वास्तव में भारत में दिखता है। इस कारण से मुझे विश्वास है कि राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली में इस कलाकार की यह प्रदर्शनी एक प्रभावपूर्ण विमर्श को बढ़ायेगी व दोनों देशों के समृद्ध आदान–प्रदान में योगदान देगी।

भारत और फ्रांस, कला के प्रति उत्साह व संस्कृति के लिए रूचि को साझा करते हैं। उनके कलात्मक आदान– प्रदान सदियों पुराने व प्रंगाढ़ हैं, जो पैरिस में बौज़ –आर्ट में अध्ययन करने के लिए आए भारतीय कलाकारों जैसे कि सैयद हैदर रज़ा व अमृता शेरगिल की यात्रा द्वारा में प्रदर्शित होता है । आधुनिक और समकालीन भारतीय कलाकारों के प्रदर्शन में फ्रांसीसी संग्रहालयों की बढ़ती रूचि ने इन संबंधों को पुर्नजीवित किया और मुझे आशा है कि फ्रांसीसी जनता को जल्द ही पेरिस की एक संस्था में राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली के संग्रह को जानने का अवसर मिलेगा। इसी तरह फ्रांस के कई कलाकारों ने भारत को प्रेरणा का अटूट स्त्रोत पाया है, क्योंकि हेनरी कार्टियर –ब्रेसैं एवं मार्क रिब्बू की तस्वीरों के साथ जौं रनोआर की फिल्में भी शानदार वर्णन करती हैं। भारत में फ्रांस का दूतावास दोनों देशों के मध्य संवाद विकसित करने के लिए अच्छे प्रयास करता है। कलाकार निवास कार्यक्रम, छात्र आदान –प्रदान एवं पेशेवर प्रशिक्षणों के माध्यम से हम इन कड़ियों को बढ़ाने की दिशा में अपने भारतीय भागीदारों के साथ मिलकर काम करते हैं, जो हमें अत्यधिक समृद्ध करते हैं, प्रदर्शनी जेरार्ड गरूस्त – द अदर साइड भी इस प्रयास का परिणाम है।

इमैनुएल लिनैन
भारत में फ्रांस के राजदूत

France-India cultural relations have been marked by great events. The exhibition Gérard Garouste – The Other Side at the National Gallery of Modern Art, New Delhi, will without a doubt be counted among these. Indeed, the work of Gérard Garouste – an unclassifiable artist and iconoclast – has certainly made its mark on contemporary painting and challenged it by its radicalness, its symbolic power and the reflection it offers on this subject. It was thus with much interest and passion that the Embassy of France in India nurtured this project initiated by Galerie Templon with the support of the French Ministry of Culture and the Institut Français. I am very pleased that the Indian public will discover this French artist, whose talent and complexity have earned him international recognition.

Gérard Garouste's paintings will particularly resonate in India, as they draw on myths, symbols and the sacred. All these dimensions are particularly present in this country where art, culture and customs are imbued with a strong spirituality. Gérard Garouste has claimed that a rationalist and a lunatic coexist in each and every one. What nation better than India sees a constant dialogue between its attachment to traditions and ancient knowledge with the most disconcerting profusion, extravagance, and inventiveness? The tension that we perceive in Gérard Garouste's work truly shows through in India. This is why I am convinced that the artist's retrospective at the National Gallery of Modern Art, New Delhi, will give rise to passionate argument and rich exchanges between our two peoples.

India and France share this passion for art, this taste for culture. Their artistic exchanges are age-old and intense, as the journeys of many Indian painters who came to study at the Beaux-Arts in Paris demonstrate: such as Sayed Haider Raza and Amrita Sher-Gil, to name but a few. French museums' growing interest in exhibiting modern and contemporary Indian artists has revived these relations and I hope that the French public will soon have the opportunity to discover the collections of the National Gallery of Modern Art, New Delhi, in a Parisian institution. Similarly, several French artists have found India an inexhaustible source of inspiration, as Henri Cartier-Bresson and Marc Riboud's photographs, as well as Jean Renoir's films brilliantly illustrate. The Embassy of France in India strives precisely to develop this dialogue and these .ows between our two countries.

Through artist residency programmes, student exchanges, and professional trainings, we work closely with our Indian partners towards enhancing these links that enrich us so much. The exhibition, Gérard Garouste – The Other Side, is also a result of this endeavour.

Each canvas in this show expresses a reversal, turning our iconographic codes upside down to achieve a transformation for which I take moral responsibility. To prepare, I have poured over the Hebrew written sources of Christian iconography.

Emmanuel Lenain
Ambassador of France to India

इंडीयन, दूत की घोषणा, 1988, कैनवस पर एकेलिक 210x700 सें.मी.,
म्यूज़ द आर्ट मोर्दैन ए कौंजोंम्पोंरा द सेंट– इटियेन मेथरोपोल
फोटो: सिरील शूऐट

Indienne, the Angel of Annunciation, 1988
Acrylic on canvas, 210 x 700 cm
Musée d'art moderne et contemporain de Saint-Etienne Métropole
Photo: Cyrille Cauvet

ऐकू लिनन कैनवस पर एकेलिक मे बनाई गई यह विशाल हैंगिंग कलाकृति इंडीयन श्रृंखला में से एक है, जो कि कलाकार रूवच्छ रूवप्न को दांते की कृति एंव उसके ईसाई संदर्भ को, बाइबिल के घोषणा के दृश्य के संदर्भ में दर्शाता है।

This huge hanging done in acrylic on ecrulinen canvas is one from the Indiennes series and reflects the artist's oneiric vagabondage around the work of Dante and his Christian references,in this case the biblical scene of the Annunciation.

शमीर 2005, कैनवस पर तेलरंग 200x260 सें.मी.
निजी संग्रह, पेरिस,
फोटोः बैरथों ह्युए / टुट्टी

Shamir 2005, Oil on canvas, 200 x 260 cm
Private collection, Paris
Photo: Bertrand Huet / Tutti

यह हिब्रू से लिया गया शीर्षक न तो चित्र की स्पष्ट व्याख्या करता है और न ही वर्णन करता है बल्कि चित्र की हमारी व्याख्या के साथ विसंगतियां उत्पन्न करता है। शमीर एक रहस्य एंव अभिव्यक्ति से परे के विचार है। यह येरूशलम में मंदिर के निर्माण का वर्णन करने वाली एक पुस्तक के अनुच्छेद से लिया गया है। हिब्रू शब्द शमीर, जिसका अर्थ है कीड़ा की व्याख्या, दुनिया के साथ साथ बाइबल से भी जुड़ी है, जो भरण के विचार और संचरण की नैतिकता पर आधारित हैं।

This title taken from Hebrew neither explains nordescribes the painting but instead creates a discrepancy with our interpretation of the image. Shamir induces the idea of a secret and a meaning beyond what is represented. It came from an exegesis of a passage in the Book of Kings describing the construction of the Temple in Jerusalem. The interpretation of the Hebrew word shamir, which means worm, connected in the Bible with the word even, meaning stone, opens on to the idea of filiation and the ethics of transmission.

अंध पुस्तक विक्रेता, 2005, कैनवस पर तेलरंग, 270x320सें.मी.,
सौंत्र नासियोनाल देज़ आर्ट्स प्लास्टिक्स, फ्रांस
फोटोः बैरथों ह्युए / टुट्टी

Blind Booksellers, 2005, Oil on canvas, 270 x 320 cm
Centre National des Arts Plastiques, France
Photo: Bertrand Huet / Tutti

अंध पुस्तक विक्रेता, ईसाई धर्म की आलोचना पर एक श्रृंखला से संबंधित है। यह शीर्षक उस टिप्पणी से आया है , जसमें संत ऑगस्टीन ने बाइबिल पढ़ने और समझने में असमर्थ होने के कारण यहूदियों के एक समूह को सेवकों का काम सौंप दिया।

Blind Booksellers belongs to a series on the critique of Christianity. The title comes from the commentary in which Saint Augustine assigns to the Jews the role of servants, incapable of reading and understanding the Bible.

अंजीर और हीस्सोप, (आत्मचित्र), 2007, कैनवस पर तेलरंग, 130X97 सें.मी.
निजी संग्रह, पेरिस
फोटोः बैरर्थो ह्युए / टुट्टी

The Fig and the Hyssop (self-portrait), 2007, Oil on canvas, 130 x 97 cm
Private collection, Paris
Photo: Bertrand Huet / Tutti

इस (आशावादी) आत्मचित्र में कलाकार ने स्वयं को एक फल और एक फूल के साथ दर्शाया है। जो शुभ होने के साथ खुशहाली का द्योतक हैं। अंजीर का फल एवं औषधीय वनस्पति, पानी और शुद्धि के प्राचीन संकेत को दर्शाती हैं।

This optimistic self-portrait shows the artist with a fruit and a flower, which are bringers of good things. The fig evokes study and the hyssop, water and the ancient gestures of purification.

चार्टेस, 2007, कैनवस पर तेलरंग, 270x320 से.मी.
निजी संग्रह
फोटोः बैरथों ह्युए/टुट्टी

Chartres, 2007, Oil on canvas, 270 x 320 cm
Private collection
Photo : Bertrand Huet / Tutti

यह कैनवस गरूस्त के कुछ व्यक्तिगत प्रकरणों को दर्शाने वाली श्रृंखला का हिस्सा है। एक अजीब दिन, जब वह स्टेशन के लिए रवाना हुए, कलाकार ने किसी तरह अपनी यात्रा शास्त्र कैथेड्रल पर समाप्त की। इस चित्र में हम विलार्ड द होनकूर द्वारा बनाये गये चकव्यूह को पहचान सकते हैं जोकि उनके वहां पहुचनें की प्रकिया की जटिलता एंव प्रयास को प्रदर्शित करता है।

This canvas is part of a series evoking certain episodes of Garouste's personal history. One crazy day, when he set off for the station, the artist somehow ended up in Chartres cathedral. Here we recognise the maze there by Villard de Honnecourt.

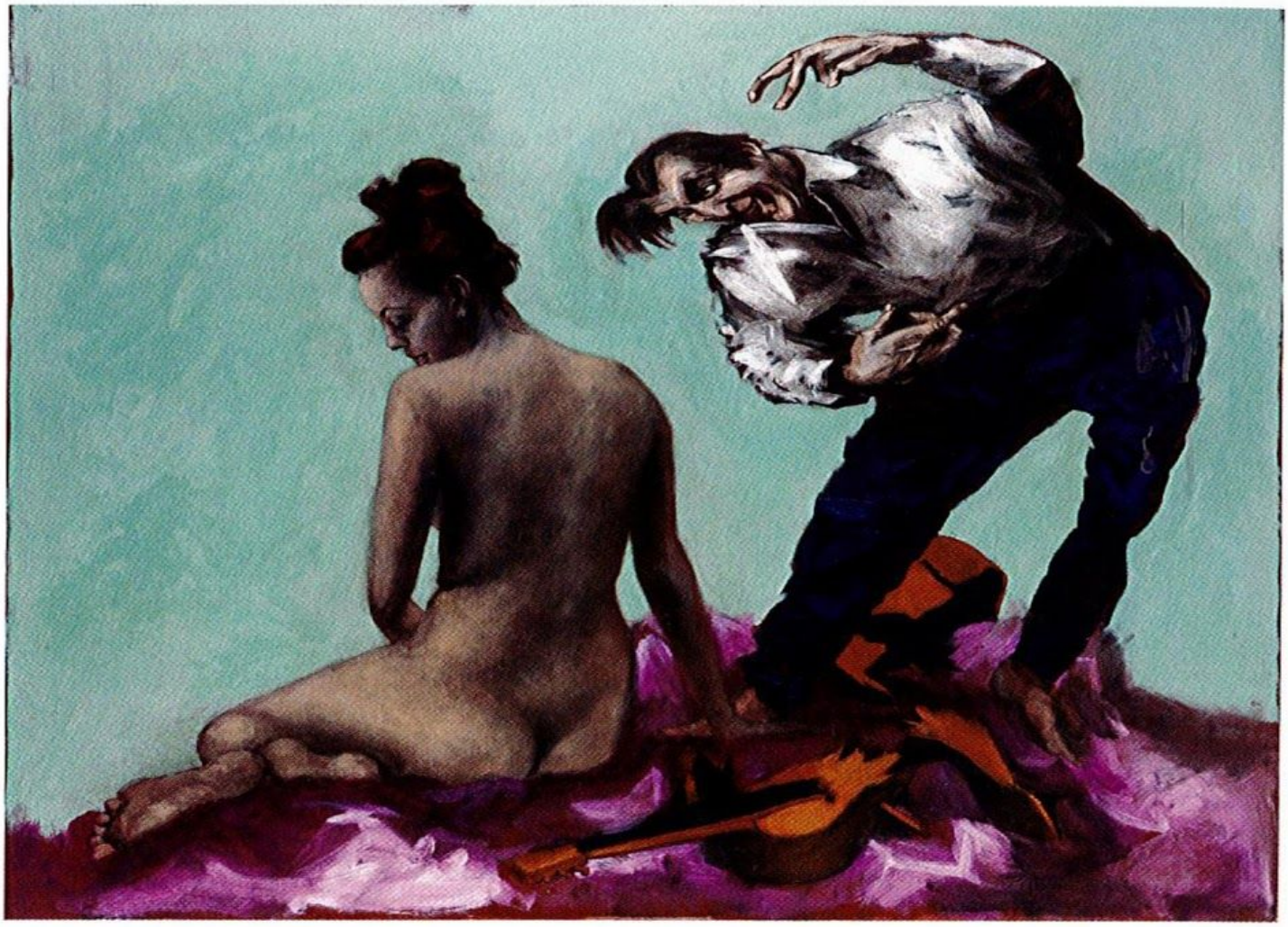

टूटी हुई गिटार, 2009, कैनवस पर तेलरंग, 160X194.5 सें.मी.
निजी संग्रह
फोटोः बैरथों ह्युए / टुट्टी

The Broken Guitar, 2009, Oil on canvas, 160 x 194.5 cm
Private Collection
Photo: Bertrand Huet / Tutti

यह चित्र गोएथे के फॉस्ट के एक अनुच्छेद से सीधे प्रेरित है। इस चित्र में कलाकार ने जानबूझ कर पश्चिमी पारंपरिक चित्रकला के कोड जैसे नग्न अध्ययन व व्यक्तिगत विषयों को फिर से बतलाने की चेष्टा की है। इस प्रकार से उन्होने चित्रकारी में आधुनिकता को विडंबनापूर्ण ढ़ंग से खत्म करने के लिए आवाह्न किया है।

In this painting directly inspired by a passage in Goethe's Faust, the artist reprises the codes of traditional western painting that are the individual subject and the nude, in a deliberately mannerist approach.
The artist thus addresses an ironic nod to a form of modernity that would like to erase.

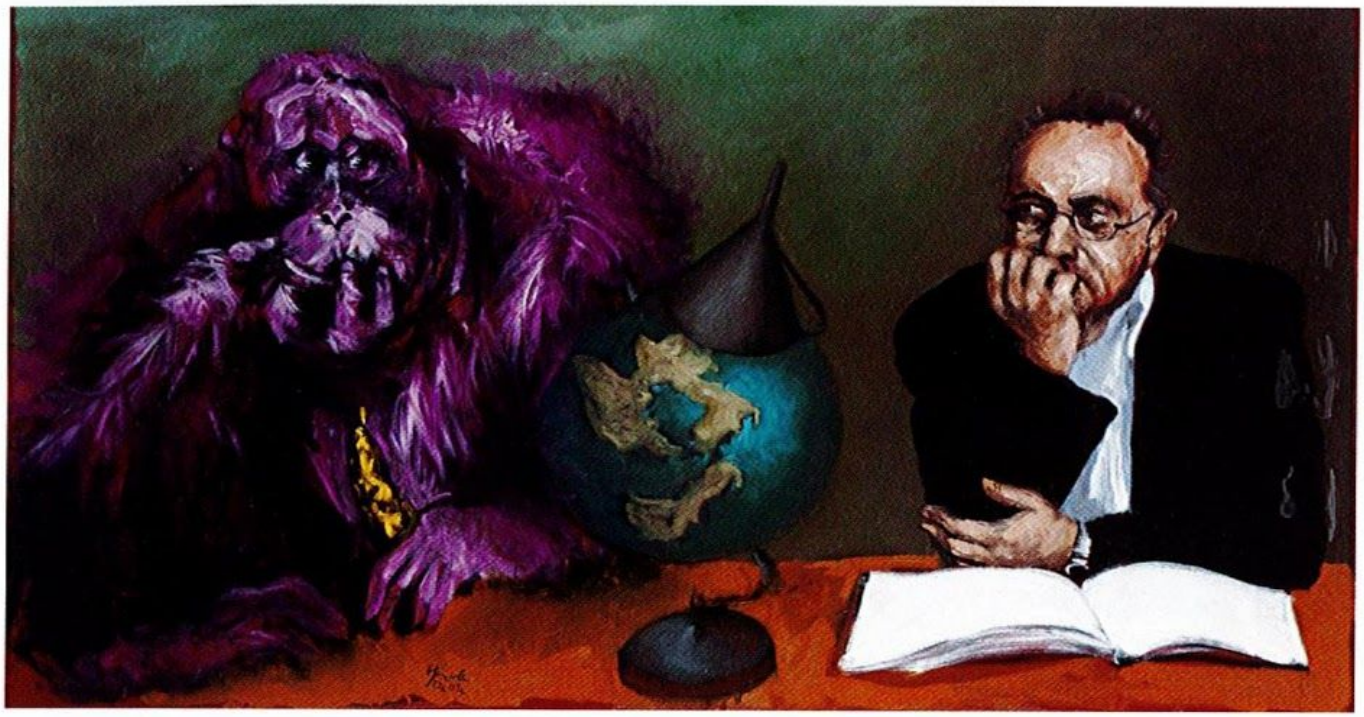

अभिप्राय, 2010, कैनवस पर तेलरंग, 114x195 सें.मी.,
निजी संग्रह, पेरिस
फोटोः बैरर्थो ह्युए / टुट्टी

Drift, 2010, Oil on canvas, 114 x 195 cm
Private collection, Paris
Photo: Bertrand Huet / Tutti

महाद्वीपीय बहाव हमें कई मिलियन वर्षों में कहां से कहां ले गया है? समय, विज्ञान और अंतर्ज्ञान पर एक प्रतिबिंब।

Where will continental drift have taken us in several million years from now?
A reflection on time, science and intuition.

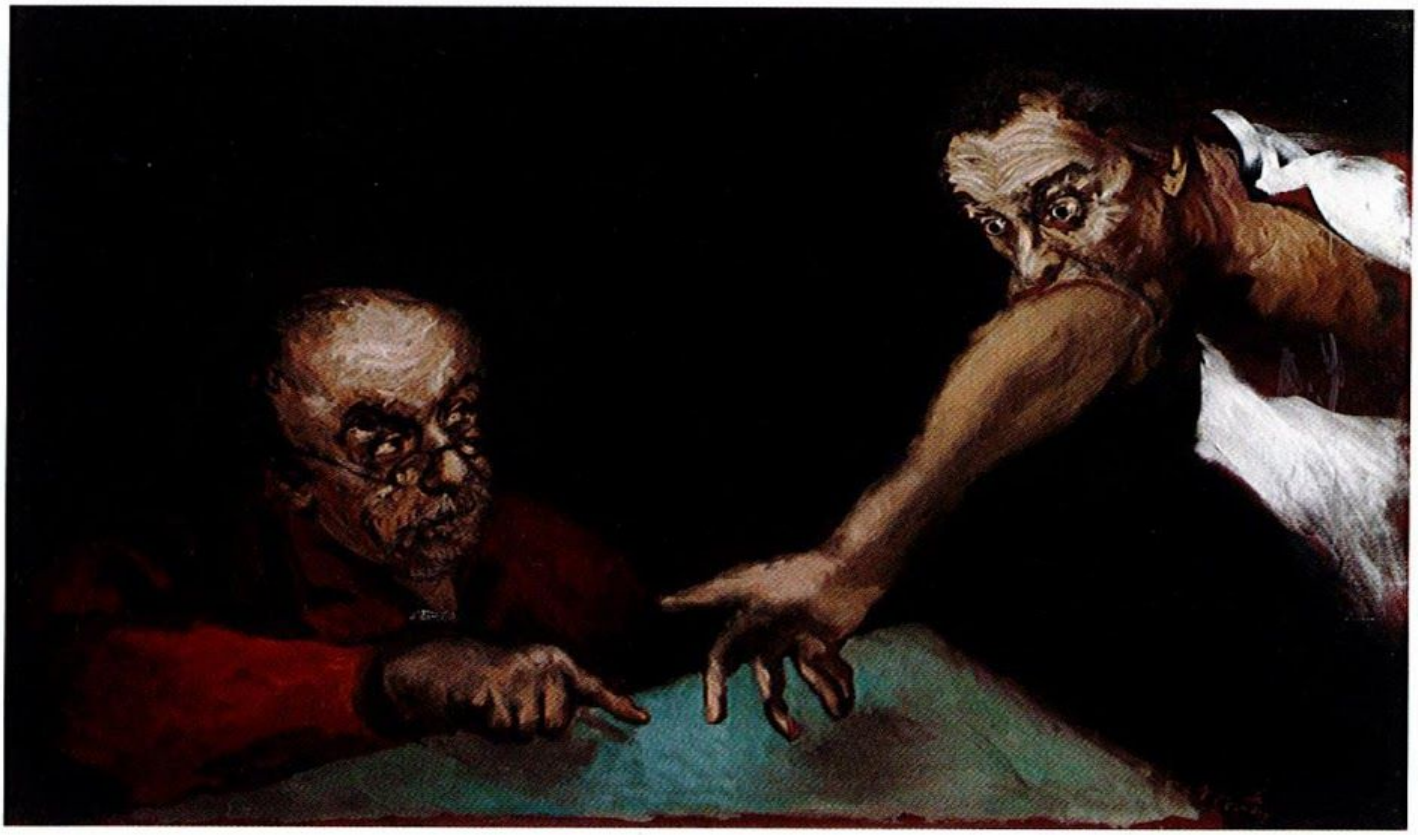

संधि, 2011, कैनवस पर तेलरंग, 130x195 सें.मी.
निजी संग्रह, पेरिस
फोटोः बैरथों ह्युए/टुट्टी

The Pact, 2011, Oil on canvas, 130 x 195 cm
Private collection, Paris
Photo: Bertrand Huet / Tutti

मेफिस्टोफेल्स यहां कलाकार के दोस्त और फॉस्ट की विशेषताओं के साथ एक ही आकति के दो चेहरे हैं। वास्तविक जीवन में, दोनों पुरूष हमेशा असहमत होते हैं। गरूस्त की पेंटिग में दोहरापन एक आवर्ती विषय है, जोकि "द क्लासीसिस्ट एंड द अपाचे", डॉन क्विक्सोट और सांचो पांजा में भी समाहित है। मुंह में हाथ की यह जुनूनी आकृति, चक्र एंव स्वय से पीछे हटने के आंदोलन के विचार को अभिव्यक्त करता है।

Mephistopheles, here with the features of the artist's friend, and Faust, with the features of the artist, are two faces of the same figure. In real life, the two men always disagree. The double is a recurring theme in Garouste's painting, where it is also embodied by "the Classicist and the Apache" and Don Quixote and Sancho Panza. The obsessive image of the arm in the mouth conveys the idea of the cycle, of movement turning back on itself.

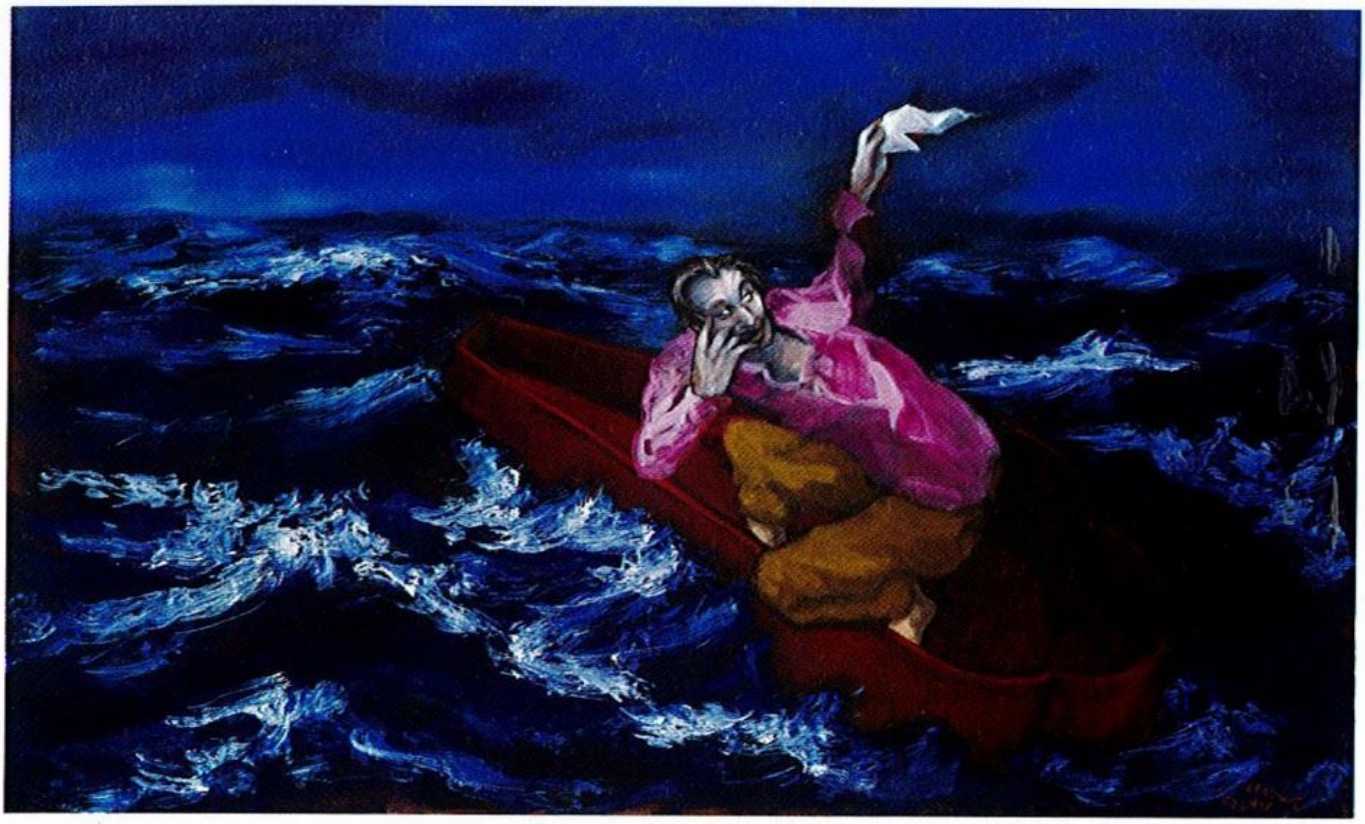

सार्कोफैगस, 2012, कैनवस पर तेलरंग, 130X195 सें.मी.
निजी संग्रह
फोटोः बैरथों ह्युए / टुट्टी

The Sarcophagus, 2012, Oil on canvas , 130 x 195 cm
Private collection
Photo: Bertrand Huet / Tutti

यह चित्र सिगार्स ऑफ द फराओ पुस्तक के अध्याय हैरज़े कार्टून द्वारा प्रेरित था। एक बार फिर से टिनटिन के पास गरूस्त की विशेषताएं हैं।

This painting was inspired by an episode in the Hergé cartoon Cigars of the Pharaoh. Once again, Tintin has Garouste's features.

अंजीर और हीस्सोप (आत्मचित्र) 2007,
कैनवस पर तेलरंग, 130x97सें.मी
निजी संग्रह, पैरिस
फोटो: बैरथों ह्युए/टुट्टी

The Fig and the Hyssop (self – portrait) 2007
Oil on canvas , 130 x 97 cm
Private collection, Paris
Photo: Bertrand Huet / Tutti

National Gallery of Modern Art
Jaipur House, India Gate, New Delhi – 110 003 INDIA | Ph. 011-23382835/ 4640 Ext 261, ngma.delhi@gmail.com
| www.ngmaindia.gov.in | 10:00 am - 6:30 pm Tuesday to Friday and 11:00 am - 8:00 pm Saturday and Sunday